मुख्य परीक्षा

प्रश्न- शीतयुद्धोत्तर काल में भारत की विदेश-नीति के सम्मुख किस प्रकार की चुनौतियाँ विद्यमान हैं? इन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुये भारत को किस प्रकार के राजनयिक तौर-तरीके अपनाने होते हैं? विश्लेषण कीजिए।

(250 शब्द)

What type of challenges are present infront of India in post cold war era? Which types of diplomatic ways should India adopt considering these challenges? Analyse. (250 Words)

मॉडल उत्तर

1991 में सोवियत संघ के विखण्डन के पश्चात् नवीन वैश्विक अवस्था का प्रारंभ हुआ। जो एक ध्रुवीय अर्थात् अमेरिकी प्रभुत्व के पश्चात् वर्तमान में बहुध्रुवीय व्यवस्था को प्रदर्शित कर रही है। जहाँ शक्ति के अनेक केन्द्र दिखाई देते हैं। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् कुछ समय तक अमेरिकी प्रभुत्व रहा। लेकिन 2000 के दशक में पुन: रूसी उभार तथा चीन का एक शक्ति के रूप में उदित होना भारतीय विदेश नीति के समक्ष भी कुछ चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है।

शक्ति के नवीन केन्द्र के साथ संतुलन की नीति अपनाना भारत के समक्ष प्रमुख चुनौती है क्योंकि इन नवीन शक्तियों के अपने अलग-अलग हित तथा मुद्दे हैं। भारत ने प्रारंभ से ही गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया है तथा सभी पक्षों के साथ समन्वयकारी नीति का पालन किया है। शीत युद्ध काल में भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन करते हुए भी सोवियत रूस के साथ निकटता बनाए रखी थी क्योंकि अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को समर्थन दिया जा रहा था लेकिन शीत युद्धोत्तर काल में भारत ने इन नीतियों को पुनर्परिभाषित किया तथा अमेरिका के साथ भी संबंधों को बहाल किया। 2008 में नाभिकीय समझौता तथा हाल ही का कोमकासा सैन्य सूचना आदान-प्रदान समझौता इसी का परिणाम है।

वर्तमान में वैश्विक व्यवस्था में कुछ नवीन चुनौतियाँ उपस्थित हुई हैं, जिनमें वैश्विक आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन तथा साइबर सुरक्षा प्रमुख हैं। संचार व्यवस्था के सशक्त होने के साथ-साथ वैश्विक पारस्परिकता में भी वृद्धि हुई है लेकिन आतंकवाद तथा साइबर चुनौतियों ने सुरक्षा को भी प्रभावित किया है तथा अनिश्चितता में वृद्धि हुई है।

किसी भी देश की विदेश नीति के मुख्यत: चार उद्देश्य होते हैं- सुरक्षा, विकास, स्वायत्तता तथा प्रतिष्ठा। भारत ने प्रारंभ से ही इस दिशा में कार्य किया है। भारत रचनात्मक संबंधों का समर्थन करता है, इसके बावजूद कि भारत की संसद पर हमला तथा मुम्बई जैसे हमले हुए। भारत ने हिंसात्मक प्रतिकार की नीति नहीं अपनाई क्योंकि उसका मानना है, कि संघर्ष से जटिलतायें ही बढ़ेंगी। लेकिन भारत का मानना है कि इसे उसकी कमजोरी नहीं समझना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन की समस्या ने विश्व को सचेत किया है तथा इसके लिए वैश्विक प्रयास भी किए जा रहे हैं लेकिन विकसित तथा विकासशील देशों के मध्य मतभेदों के कारण किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा रहा है। भारत के समक्ष भी इससे निपटने की चुनौती विद्यमान है एवं वह विकासशील देशों के पक्ष का प्रतिनिधित्व भी करता है। इसके लिए भारत को संतुलनात्मक एवं सहयोगात्मक रूख अपनाने की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में आतंकवाद ने वैश्विक एवं बहुआयामी रूप ग्रहण किया है। साइबर आतंकवाद इसका सबसे जटिल एवं खतरनाक रूप है। चूंकि भारत इससे सर्वाधिक सुभेद्य देश है। अत: उसके सामने जटिल चुनौती है। पाकिस्तान एवं चीन जैसे देशों से तनावपूर्ण संबंध तथा दोनों का आपसी गठजोड़ भारत के सामने प्रमुख चुनौती है। शीतयुद्ध के पश्चात् आर्थिक वैश्वीकरण का तीव्र प्रसार हुआ तथा भारत ने उदारीकरण करके इस व्यवस्था में प्रवेश किया, लेकिन संरक्षणवाद की नीति, वैश्विक आर्थिक संस्थाओं, जैसे विश्व बैंक, आई.एम.एफ. तथा विश्व व्यापार संगठन में विकसित देशों के प्रभुत्व ने भारत सहित विकासशील देशों के हितों को विपरीत रूप से प्रभावित किया है। अत: आर्थिक क्षेत्र में भी भारत के समक्ष चुनौती विद्यमान है।

इस प्रकार निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारत को शीतयुद्ध के पश्चात् आए वैश्विक परिवर्तनों के साथ कुछ नवीन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिसके लिए उसे अपनी पूर्व नीतियों अर्थात् सहयोगात्मकता, स्वायत्तता, समावेशिता तथा शांति व लोकतंत्रात्मक पहलुओं को लेकर प्रतिबद्धता के साथ चलना होगा।